

अध्याय 12

अपठित बोधात्मक प्रश्न

अपठित गद्यांश पाठ्य-पुस्तकों से सम्बन्धित नहीं होते। इनका उद्देश्य ऐसे प्रश्नों को परीक्षार्थियों के समक्ष रखना है, जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता, भाषा दक्षता तथा गद्यांश को समझने की क्षमता का परीक्षण किया जा सके। प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व परीक्षार्थी को एकाग्रता के साथ गद्यांश का अध्ययन करना चाहिए।

उत्तर देते समय ध्यान रखने योग्य बातें—

1. अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके भावों को पूर्णतः आत्मसात् करना चाहिए।
2. गद्यांश के भीतर ही प्रश्नों के उत्तर (विकल्प) मौजूद होते हैं। कभी-कभी गद्यांश के शब्दों अथवा भावों से जुड़े ऐसे भी प्रश्न किए जाते हैं, जिनके उत्तर गद्यांश में मौजूद नहीं होते, किन्तु गद्यांश को समझकर परीक्षार्थी आसानी से उत्तर दे सकते हैं।
3. यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाता है, तो उसके केन्द्रीय भाव पर ध्यान देते हुए, शीर्षक की पहचान करनी चाहिए।
4. रेखांकित शब्दों के अर्थ तथा व्याकरण सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर देते समय प्रसंग को ध्यान में रखना जरूरी है।

प्रस्तुत अध्याय अपठित
गद्यांशों तथा उनके
सम्बन्धित प्रश्नों
पर आधारित है।

साधित उदाहरण

उदाहरण 1

नैनो तकनीक से विश्व में नवीन आशा का संचार हुआ है। भविष्य में इस तकनीक से मनुष्य को होने वाले लाभ की कल्पना की जा सकती है। नैनो तकनीक ने यह सम्भव कर दिया है कि मनुष्य अपनी इच्छा से नये परमाणु तथा उनके समूहों का निर्माण कर सकता है तथा उन्हें यथास्थान स्थापित कर सकता है। नैनो तकनीक ने असीमित क्षेत्रों में अपने लिए स्थान निर्धारित किया है। आने वाले समय में जीवन का प्रत्येक आयाम इस तकनीक से आच्छादित होगा। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कैंसर तथा एड्स जैसी बीमारियों को समाप्त करने में यह सक्षम होगा, ऐसी कल्पना की जा रही है। नैनो तकनीक से बनाई जाने वाली दवाइयाँ किसी साइड-इफेक्ट के बिना मरीज को राहत पहुँचाने में सक्षम होंगी।

‘नैनो’ शब्द ग्रीक भाषा के ‘नैनोज’ से बना है, जिसका अर्थ होता है – ‘सूक्ष्म’, लेकिन विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय मापन प्रणाली में नैनोमीटर एक मीटर का अरबवाँ भाग होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि पदार्थों के स्थूल गुणधर्म का परमाण्विक गुणधर्म में परिवर्तन नैनोमीटर स्तर पर सम्भव है। इसी प्रक्रिया को अपनाकर नये पदार्थों का निर्माण किया जा सकता है, जो अपने मूल पदार्थों के गुणधर्म से भिन्न हों। भारत में नैनो तकनीक पर अनुसन्धान की प्रक्रिया उस स्तर की नहीं हुई है, जहाँ से हमारी प्रतिस्पर्द्धा विकसित देशों से हो सके।

प्रश्न

1. ‘नैनो तकनीक’ ने विश्व चेतना पर क्या असर डाला है?
 - (a) नवीन आशा का संचार हुआ है
 - (b) असुरक्षा की भावना बढ़ी है
 - (c) प्रतिस्पर्द्धा का भाव आया है
 - (d) आतंकवाद का खतरा बढ़ा है
2. ‘नैनो तकनीक’ का प्रयोग किन क्षेत्रों में सम्भव है?
 - (a) केवल कृषि में
 - (b) केवल स्वास्थ्य में
 - (c) असीमित क्षेत्रों में
 - (d) अन्तरिक्ष के क्षेत्र में
3. ‘नैनो’ किस भाषा का शब्द है?
 - (a) चीनी
 - (b) जापानी
 - (c) ग्रीक
 - (d) स्पेनिश
4. ‘नैनो मीटर’ एक मीटर का ...हिस्सा है।
 - (a) सौवाँ
 - (b) हजारवाँ
 - (c) अरबवाँ
 - (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. ‘नवीन’ का विलोम शब्द होगा

- (a) अर्वाचीन
- (b) प्राचीन
- (c) पुरातन
- (d) नूतन

उत्तर

1. (a) 2. (c) 3. (c) 4. (c) 5. (b)

उदाहरण 2

सेवा, त्याग तथा दान-धर्म का भारतीय सांस्कृतिक चेतना में अत्यधिक महत्त्व है। भारतीय दर्शन ने जीव मात्र को ईश्वरीय रूप माना है। आत्मा तथा परमात्मा के विचार ने हमारे जीवन को सहज, सुगम एवं परमार्थकारी बनाया है। सारा विश्व हमारा घर है और हम सभी की भलाई के लिए कामना करें, यही हमारे जीवन का परम लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, जीवन में शुचिता और गम्भीरता का समावेश कर इसे सुखी बनाने में सहायक हो सकते हैं। हमें चाहिए कि हम अपने अन्तःकरण को शुद्ध कर रूढ़ियों, अन्धपरम्पराओं से पृथक् होकर सेवा-मात्र को अपना मार्ग बनावें। किसी दीन-दुःखी को देखकर यदि हमारे हृदय में पीड़ा का अनुभव नहीं होता तो अवश्य ही हमने अपनी महान् संस्कृति और दर्शन से कुछ भी नहीं सीखा है। हमें यह समझना चाहिए कि पीड़ित व्यक्ति भी हमारी तरह हाड़-मांस का जीवित प्राणी है, जिसके भीतर अनुभव करने वाली इन्द्रियाँ हैं। भूख-प्यास सबको लगती है। यदि हमारे सामने कोई व्यक्ति भूखा-प्यासा, वस्त्र विहीन रहता है तो हमारे लिए यह गर्व की बात नहीं कि हम लम्बी-लम्बी मोटरगाड़ियों से धूल उड़ाते चलते हैं। आज भारतीय संस्कृति पर उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की कालिमा का प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण हम ‘बन्धुत्व’ और ‘सहानुभूति’ को भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न

1. भारतीय संस्कृति में किस प्रवृत्ति का महत्त्व रहा है?
 - (a) सेवा, त्याग तथा दान-धर्म
 - (b) जातिवाद, भ्रष्टाचार तथा अपराधीकरण
 - (c) अस्पृश्यता
 - (d) बेईमानी
2. हमारे जीवन का परम लक्ष्य क्या होना चाहिए?
 - (a) सबकी भलाई
 - (b) पूजा-पाठ
 - (c) धन कमाना
 - (d) नौकरी पाना

3. भारतीय संस्कृति पर किसका प्रभाव आधुनिक समय में बढ़ता जा रहा है?

- (a) उपभोक्तावादी संस्कृति
- (b) बन्धुत्व तथा प्रेम की संस्कृति
- (c) इस्लामी संस्कृति
- (d) वैदिक संस्कृति

4. 'शुचिता' का अर्थ है

- (a) यथार्थता
- (b) सत्यता
- (c) पवित्रता
- (d) निश्छलता

5. दीन-दुःखियों के प्रति हमारा क्या भाव होना चाहिए?

- (a) सहायता का
- (b) बच-निकलने का
- (c) मतलब नहीं रखना चाहिए
- (d) अस्पृश्यता का

उत्तर

1. (a) 2. (a) 3. (a) 4. (c) 5. (a)

उदाहरण 3

1732 ई. में जब मुगल शासक मुहम्मद शाह था, जयसिंह को मालवा का शासक बनाया गया। उसे नियुक्त करने का उद्देश्य मराठों को मालवा से भगाना था, लेकिन जयसिंह इस कार्य को करने में विफल रहा और जयपुर लौट गया। इसी समय मराठों ने मालवा पर आक्रमण कर, उसे अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रदेश को सुव्यवस्थित रखने के लिए पेशवा ने जागीर प्रथा प्रारम्भ की तथा स्थानीय सरदारों को जागीरें प्रदान कीं। इसी समय सिन्धिया को उज्जैन, आनन्दराव पवार को धार, होल्कर को मालवा तथा तुकोजी को देवास की जागीरें प्रदान की गईं। इस प्रकार सिन्धिया, होल्कर तथा पवार के नवीन रियासतों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। ये नवीन रियासत मालवा क्षेत्र के नवयुग के प्रदर्शक बने। इन रियासतों ने मालवा की सांस्कृतिक चेतना को भी प्रभावित किया। 1741 ई. के बाद मुगल साम्राज्य का सम्बन्ध सदा के लिए मालवा से समाप्त हो गया।

प्रश्न

1. मुगल शासक मुहम्मद शाह ने 1732 ई. में किसे मालवा का शासक नियुक्त किया?
 - (a) जसवन्त सिंह
 - (b) उदयसिंह
 - (c) जयसिंह
 - (d) मानसिंह
2. मालवा पर अधिकार करने के बाद पेशवा ने वहाँ कौन-सी प्रथा प्रारम्भ की?
 - (a) इक्ता प्रथा
 - (b) जमींदारी प्रथा
 - (c) सैन्य अधिकार प्रथा
 - (d) जागीर प्रथा

3. 'अधिकार' का विलोम शब्द होगा

- (a) कु-अधिकार
- (b) अनाधिकार
- (c) साधिकार
- (d) अनधिकार

4. किस वर्ष मुगलों का सम्बन्ध मालवा से सदा के लिए समाप्त हो गया?

- (a) 1765 ई.
- (b) 1741 ई.
- (c) 1556 ई.
- (d) 1947 ई.

5. कौन मालवा में नवयुग के पथ प्रदर्शक बने?

- (a) मुगल शासक
- (b) नवीन रियासत
- (c) अंग्रेजी कम्पनी
- (d) अफीम की खेती

उत्तर

1. (c) 2. (d) 3. (d) 4. (b) 5. (b)

उदाहरण 4

भारत में तीव्र आर्थिक विकास की दृष्टि से देखें, तो शहरीकरण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। नई आर्थिक नीति लागू करने से पूर्व शहरीकरण के दुष्प्रभावों की ओर शायद हमारे नीति-निर्माताओं की सोच नहीं गई थी। यही कारण है कि मलिन बस्तियों में रहने वाले शहरी गरीब आज भी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। इन मलिन बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या ऐसे लोगों की है, जो शोषण के बावजूद भी बेहतर रोजगार अवसरों की अनुपलब्धता के कारण गाँव से शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर हुए। भारत में अभी शहरी जनसंख्या 38 करोड़ 20 लाख है, जो 20 वर्षों में दुगुनी हो जाएगी। शहर की जनसंख्या में वृद्धि के साथ शहरीकरण की प्रवृत्ति में तेजी आ रही है, इससे गरीबों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। रोजगार की स्थिति गाँवों की अपेक्षा शहरों में अच्छी है, लेकिन यह अधिक खुश करने वाला नहीं है। योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 6 करोड़ 82 लाख अर्थात् 25% शहरी लोग गरीबी-रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्रश्न

1. 'शहरीकरण' किस व्यवस्था की स्वाभाविक प्रक्रिया है?
 - (a) ग्रामीण विकास
 - (b) ओलम्पिक का आयोजन
 - (c) तीव्र आर्थिक विकास
 - (d) पूँजी-निवेश
2. शहरी-गरीबी का निर्धारण कौन करता है?
 - (a) राष्ट्रपति
 - (b) राज्यपाल
 - (c) वित्त आयोग
 - (d) योजना आयोग
3. 'अनुपलब्धता' का विलोम शब्द होगा
 - (a) उपलब्धि
 - (b) उपलब्धता
 - (c) उपलब्ध
 - (d) अनुपलब्ध

4. मलिन बस्तियों में रहने वालों की क्या स्थिति है?
 (a) बहुत अच्छी
 (b) मूलभूत अनिवार्यताओं से वंचित हैं
 (c) कोई आवश्यकता नहीं है
 (d) स्थिति का लेखा-जोखा नहीं है
5. शहरी क्षेत्रों के गरीबों की संख्या कितनी मानी गई है?
 (a) नगण्य
 (b) 6 करोड़ 82 लाख
 (c) 38 करोड़ 20 लाख
 (d) 10 करोड़ 25 लाख

उत्तर

1. (c) 2. (d) 3. (b) 4. (b) 5. (b)

उदाहरण 5

क्या आपने हुदहुद पक्षी का नाम सुना है? क्या आपने उसे देखा है? यह लगभग मैना जैसे आकार का होता है। रंग में हल्का-भूरा यह पक्षी देखने में बहुत आकर्षक लगता है। इसके परों और पूँछ पर काली-सफेद जेब्रा जैसी धारियाँ होती हैं। नर हुदहुद और मादा हुदहुद देखने में एक जैसे लगते हैं। इसकी चोंच लम्बी-पतली और हल्की-सी मुड़ी हुई होती है। इससे यह आसानी से कीड़े पकड़ सकता है। हुदहुद पक्षी अधिकतर समूहों में नहीं रहता। यह अकेला या अपने साथी हुदहुद के साथ हमेशा जमीन पर ही चुगता है। कभी-कभी हुदहुद कठफोड़वे जैसा लगता है, लेकिन यह उससे बिल्कुल अलग होता है। हुदहुद पूरे भारत में पाया जाता है। इसे हरे मैदान सबसे अधिक पसन्द हैं। गाँव, शहर सभी जगह हुदहुद को आप देख सकते हैं। इसे इनसानों के आस-पास रहना ही अच्छा लगता है। मिट्टी खोदते समय यह अपने पंखों को बन्द किए रहता है। इसकी आवाज बहुत सुरीली होती है। यह हू-पो-पो जैसी आवाज निकालता है, इस कारण इसका एक नाम हूपो भी है। हुदहुद का भोजन कीड़े, लार्वा-प्यूपा आदि है।

प्रश्न

1. हुदहुद का आकार कैसा होता है?
 (a) तोते जैसा (b) कौए जैसा
 (c) कबूतर जैसा (d) मैना जैसा
2. हुदहुद का रंग कैसा होता है?
 (a) हलका लाल (b) हलका सफेद
 (c) हलका भूरा (d) हलका काला
3. 'सुरीली का विलोम शब्द होगा?
 (a) बेसुरी
 (b) कुरीली
 (c) कड़वा
 (d) मधुर

4. कभी-कभी हुदहुद कैसा लगता है?
 (a) कोयल जैसा (b) कठफोड़वे जैसा
 (c) मोर जैसा (d) गौरैया जैसा
5. हुदहुद का एक अन्य नाम है?
 (a) हूपो (b) हू-पो-पो
 (c) हपो (d) हुदहुदी

उत्तर

1. (d) 2. (c) 3. (a) 4. (b) 5. (a)

उदाहरण 6

राज्य एक दायित्वपूर्ण संस्था है। वर्तमान परिस्थिति में राज्य की भूमिका समाप्त होना असम्भव है और परम्परागत मार्क्सवादी धारणा कि राज्य स्वयमेव समाप्त हो जाएगा, जनता के लिए भी हितकर नहीं है। जनता के हितों को सुरक्षित रखने के लिए क्रान्ति के पश्चात् भी राज्य की आवश्यकता है। राज्य आर्थिक व्यवस्था से संचालित होता है, जिस देश में जैसी आर्थिक व्यवस्था होगी राज्य उसी रूप में ढल जायेगा। यदि व्यवस्था, पूँजीवादी है, तो राज्य का नियन्त्रण साधनों पर नहीं रहेगा, वहीं यदि व्यवस्था साम्यवादी है तो राज्य का स्वरूप लोक कल्याणकारी हो जाएगा। आशय यह है कि आर्थिक व्यवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

आज विश्व के अधिकांश राज्य पूँजीवादी व्यवस्था में आते हैं। इसमें राज्य की प्राथमिकता क्या हो, यह एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न है। जिस प्रकार एक परिवार सर्वप्रथम अपने जीवन की सुरक्षा एवं पोषण-निमित्त उपाय करता है वही राज्य का भी दायित्व है। जिस प्रकार लाखों लोग भारत जैसे गरीब राज्य में प्राकृतिक आपदाओं यथा बाढ़, सूखा, भूकम्प इत्यादि में कीड़े-मकोड़े की भाँति नष्ट हो जाते हैं, सर्वप्रथम राज्य को उनकी सुरक्षा हेतु कदम उठाने चाहिए।

प्रश्न

1. जनता के हितों को सुरक्षित रखने के लिए किस संस्था की आवश्यकता बनी रहेगी?
 (a) व्यापारियों की (b) उद्योगपतियों की
 (c) राज्य की (d) इनमें से कोई नहीं
2. विश्व में आज सर्वाधिक कौन-सी व्यवस्था प्रचलित है?
 (a) पूँजीवादी व्यवस्था (b) मिश्रित व्यवस्था
 (c) साम्यवादी व्यवस्था (d) इनमें से कोई नहीं
3. राज्य संचालित होता है
 (a) राज्य के मुखिया से समान दायित्वों का निर्वाह
 (b) अधिकारियों से
 (c) आर्थिक व्यवस्था से
 (d) उपरोक्त सभी

4. प्राकृतिक का विलोम शब्द होगा

- (a) कृत्रिम (b) स्वाभाविक
(c) अप्राकृतिक (d) नैसर्गिक

5. प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

- (a) राज्य (b) राज्य का स्वरूप
(c) राज्य का दायित्व (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर

1. (c) 2. (a) 3. (c) 4. (a) 5. (c)

उदाहरण 7

चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल का लोकतन्त्र में क्या महत्त्व है? यह प्रश्न विचारणीय है। लोकतन्त्र रूपी वृक्ष जनता द्वारा रोपा और सींचा जाता है, इसके पल्लवन एवं पुष्पन में मीडिया की विशेष भूमिका होती है। भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। लोकतान्त्रिक राष्ट्र में नागरिकों को विशिष्ट अधिकार और स्वतन्त्रताएँ प्राप्त होती हैं। भारतीय संविधान ने भी अनुच्छेद 19 (i) के अन्तर्गत नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान की है, लेकिन जनता के व्यापक हित पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली स्वतन्त्रता बाधित भी की जानी चाहिए।

वर्तमान में बाजारवाद अपने उत्कर्ष पर है और मीडिया इसके दुष्प्रभाव से अनछुआ नहीं है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि आज मीडिया भी अधिकाधिक संख्या में प्रसार और धन पाने को बुभुक्षित है। मीडिया सत्ताधारी और मजबूत राजनीतिक दलों के प्रभाव में भी रहता है। ये दल धन के बल पर लोक रुझान को अपने पक्ष में दिखाने में सफल हो जाते हैं और सम्पूर्ण चुनाव प्रक्रिया को ही धता बता देते हैं। इस प्रकार सत्ता एवं धन इन सर्वेक्षणों को प्रभावित करते हैं। इन्हें दूध का धुला नहीं कहा जा सकता। भारत जैसे लोकतान्त्रिक राष्ट्र में जहाँ जनता निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से अपना मत अभिव्यक्त करती है, वहाँ इन सर्वेक्षणों के औचित्य-अनौचित्य पर विचार किया जाना चाहिए।

1. प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली स्वतन्त्रता क्यों बाधित होनी चाहिए?

- (a) श्रेष्ठ लोकतन्त्र की स्थापना हेतु
(b) वोट के सही उपयोग हेतु
(c) साफ-सुथरी चुनाव प्रक्रिया हेतु
(d) लोकहित को सर्वोपरि रखने हेतु

2. लेखक ने 'दूध का धुला न होना' किसे कहा है?

- (a) मीडिया से सम्बन्धित लोगों को
(b) चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल को
(c) सत्ताधारी और बड़े राजनीतिक दलों को
(d) संसद और न्यायालय को

3. भारतीय संविधान ने किस अनुच्छेद के अन्तर्गत

नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान की है?

- (a) 19 (ii)
(b) 19 (i)
(c) 19 (iii)
(d) 19 (iv)

4. सही विलोम शब्द युग्म है

- (a) प्रचार-प्रसार (b) पवित्र-पौराण्य
(c) औचित्य-अनौचित्य (d) उचित-समुचित

5. उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए

- (a) चुनाव पूर्व सर्वेक्षण
(b) चुनाव पूर्व सर्वेक्षण एवं एक्जिट पोल
(c) चुनाव प्रक्रिया
(d) लोकतन्त्र और चुनाव सर्वेक्षण

उत्तर

1. (d) 2. (a) 3. (c) 4. (c) 5. (b)

उदाहरण 8

शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता। विवेक से मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। विवेक से ही मनुष्य के भीतर उसके चहुँओर नित्य प्रति होते घटनाक्रमों के प्रति एक छिद्रान्वेषी दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शिक्षा ही मानव को मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।

शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने लगता है। निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख से स्वयं सुख का अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं।

इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्यार्थी विद्वान् ही नहीं बनता वरन् उसमें एक विशिष्ट जीवन दृष्टि, रचनात्मकता और परिपक्वता का सृजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवन यापन करता है। परन्तु आज शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की चेरी बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण में छात्र सैद्धान्तिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं।

1. छिद्रान्वेषी दृष्टिकोण से लेखक का क्या तात्पर्य है?

- (a) समन्वय की भावना उत्पन्न होना
(b) उपयुक्त और अनुपयुक्त का बोध होना
(c) मानवीयता का विकास होना
(d) विवेकशीलता का विकास होना

2. “शिक्षा ही मानव को मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है।” इस कथन के लिए उपयुक्त विकल्प चुनिए
 - (a) कटुता
 - (b) सहृदयता की भावना का विकास
 - (c) विनम्रता की भावना का विकास
 - (d) घृणा की भावना का विकास
3. शिक्षा से मनुष्य ‘स्व’ से ‘पर’ की ओर अभिगमन करने लगता है, क्यों?
 - (a) शिक्षा मनुष्य को संवेदनशील बनाती है
 - (b) शिक्षा से मनुष्य में सेवा भाव उत्पन्न होता है
 - (c) शिक्षा मनुष्य को कर्तव्यपरायण बनाती है
 - (d) शिक्षा मनुष्य में मानवीय भाव भरती है
4. सर्वांगीण का विलोम शब्द है
 - (a) सम्पूर्ण
 - (b) अर्द्धांगीण
 - (c) पूर्ण
 - (d) अपूर्ण
5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
 - (a) शिक्षा
 - (b) शिक्षा का जीवन में महत्त्व
 - (c) शिक्षा का बदलता स्वरूप
 - (d) सैद्धान्तिक व व्यावसायिक शिक्षा

उत्तर

1. (b) 2. (b) 3. (c) 4. (d) 5. (b)

उदाहरण 9

सन्तुलित आहार हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सन्तुलित आहार लेने से हमारा शरीर रोगों से सुरक्षित और हृष्ट-पुष्ट रहता है। जिस आहार में सभी पोषक तत्व सम्मिलित होते हैं, उसे सन्तुलित आहार कहते हैं। सन्तुलित आहार से हम बहुत से खतरनाक रोगों से बचे रह सकते हैं। उन खतरनाक रोगों में से एक रोग ‘एनीमिया’ है। इससे हमारे शरीर में खून की कमी हो जाती है। यँ तो इस रोग का सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है, परन्तु इस रोग का एक और बड़ा कारण है – पेट में कीड़े होना। ये कीड़े हमारे शरीर में दूषित पानी पीने और दूषित खाद्य पदार्थों के खाने से प्रवेश कर जाते हैं। अतः हमें स्वच्छ और ताजा पानी ही पीना चाहिए तथा खाद्य पदार्थों को खाने समय भी हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि वे दूषित न हों। भोजन करने से पहले हमें हाथों को अच्छी तरह से धो लेना चाहिए। शौच के लिए हमेशा शौचालयों का ही प्रयोग करना चाहिए। अतः स्वस्थ जीवन के लिए सन्तुलित आहार और स्वच्छता अत्यन्त आवश्यक है।

1. सन्तुलित आहार किसे कहते हैं?
 - (a) जिस आहार में सभी पोषक तत्व सम्मिलित हों
 - (b) जिस आहार में पोषक तत्वों का होना जरूरी नहीं है
 - (c) केवल फल
 - (d) केवल हरी तरकारियाँ
2. एनीमिया का लक्षण है
 - (a) शरीर हृष्ट-पुष्ट होना
 - (b) शरीर में त्वचा का लाल होना
 - (c) शरीर में खून की कमी होना
 - (d) मुँह में छाले होना
2. एनीमिया का लक्षण है
 - (a) शरीर हृष्ट पुष्ट होना
 - (b) शरीर में त्वचा का लाल होना
 - (c) शरीर में खून की कमी होना
 - (d) मुँह में छाले होना
3. एनीमिया रोक का एक अन्य बड़ा कारण है
 - (a) सिर में जूँ होना
 - (b) पेट में कीड़े होना
 - (c) अधिक पानी पीना
 - (d) ज्यादा सोजना करना
4. कीड़े हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं
 - (a) स्वच्छ रहने से
 - (b) ताजा और स्वच्छ पानी पीने से
 - (c) ताजे फल खाने से
 - (d) दूषित पानी और खाद्य पदार्थ-लेने से
5. हृष्ट-पुष्ट का विलोम शब्द होगा
 - (a) कुपोषित
 - (b) पुष्टता
 - (c) दौर्बल्य
 - (d) दुर्बल

उत्तर

1. (b) 2. (a) 3. (c) 4. (b) 5. (d)

उदाहरण 10

सौन्दर्य की परख अनेक प्रकार से की जाती है। बाह्य सौन्दर्य की परख समझना तथा उसकी अभिव्यक्ति करना सरल है। जब रूप के साथ चरित्र का भी स्पर्श हो जाता है तब उसमें रसास्वादन की अनुभूति भी होती है। एक वस्तु सुन्दर तथा मनोहर कही जा सकती है, परन्तु सुन्दर वस्तु केवल इन्द्रियों को सन्तुष्ट करती है, जबकि मनोरम वस्तु चित्त को भी आनन्दित करती है। इस दृष्टि से कवि जयदेव का वसन्त चित्रण सुन्दर है तथा कालिदास का प्रकृति वर्णन मनोहर है, क्योंकि उसमें चरित्र की प्रधानता है। ‘सुन्दर’ शब्द संकीर्ण है, जबकि ‘मनोहर’ व्यापक तथा विस्तृत है। साहित्य में साधारण वस्तु भी विशेष प्रतीत होती है तथा उसे मनोहर कहते हैं।

- सौन्दर्य की परख की जाती है
 - आनन्द की मात्रा के आधार पर
 - इन्द्रियों की सन्तुष्टि के आधार पर
 - रूप के आधार पर
 - मनोहरता के आधार पर
- रसास्वादन की अनुभूति का बोध होता है
 - चरित्र स्पर्शी रूप से
 - चित्त के आनन्द से
 - सौन्दर्य अभिव्यक्ति से
 - इन्द्रिय सुख मात्र से
- कवि जयदेव का 'वसन्त चित्रण' सुन्दर है, पर मनोहर नहीं, क्योंकि
 - यह इन्द्रिय सुखदायक है
 - इसमें केवल सौन्दर्य वर्णन है
 - यह चित्त को आनन्दित नहीं करता
 - इसमें अनुभूति नहीं है
- संकीर्ण का विलोम शब्द है
 - प्रसार
 - विस्तीर्ण
 - कीर्ण
 - विकर्ण
- ऊपर दिए गए गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है
 - साहित्य और सौन्दर्य
 - अभिव्यक्ति की अनुभूति
 - सुन्दरता बनाम मनोहरता
 - सुन्दरता की संकीर्णता

उत्तर

1. (b) 2. (a) 3. (b) 4. (b) 5. (c)

उदाहरण 11

विज्ञान शब्द की परिभाषा और क्षेत्र तथा इसकी प्रौद्योगिकी से भिन्नता के विषय में स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। कुछ शक्तिशाली व्यक्तियों में, जिनके पास मानव जाति के भविष्य की चाबी है, शायद विज्ञान ही सिर्फ एक महत्वपूर्ण अनुपम स्थिति में बिना किसी आपत्ति के सबके द्वारा स्वीकार किया जाने वाला विषय है।

आज विज्ञान से हमारा अर्थ हमारे विश्व और उसके परिवेश के मूल ज्ञान से, इसके सभी क्षेत्रों में ज्ञान की नियन्त्रित और नियमित खोज से है। परन्तु इस ज्ञान का प्रयोग जरूरी नहीं कि सार्वजनिक प्रयोजनों के लिए किया जाए। प्रौद्योगिकी में हम उन अनगिनत विधियों का उल्लेख करते हैं जिनसे विज्ञान को मानव सेवा के लिए प्रयुक्त किया जा सके। दोनों में स्पष्ट अन्तर बताने के लिए आणविक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वर्तमान सर्वाधिक लोकप्रिय क्षेत्रों से उदाहरण दिए जा सकते हैं। यह 'विज्ञान' है जिसमें भारी धात्विक तत्त्व यूरेनियम के नाभिक से अलग या विखण्डित हुए अंशों की प्रकृति और

संख्या का मापन होता है। यह प्रौद्योगिकी है जिसमें इस वैज्ञानिक 'ज्ञान' का प्रयोग बिजली बनाने के लिए परमाणु बिजलीघर की रूप-रेखा या उसे बनाने में किया जाता है। यह भी प्रौद्योगिकी है जो नैतिक रंग ले लेती है और नैतिकता तथा अनैतिकता को अंकित करती है। विज्ञान तटस्थ या अनैतिक है और कभी भी नैतिक आचार या मानवीय कल्याण का विरोध नहीं कर सकता, यद्यपि एक वैज्ञानिक और तकनीशियन एक मानव होने के नाते इसका विरोध कर सकते हैं।

- उपर्युक्त अवतरण किस प्रकार का है?
 - अलंकारिक
 - वृत्तात्मक
 - वर्णनात्मक
 - व्याख्यात्मक
- लेखक प्रयत्न कर रहा है
 - विज्ञान की तरफ अच्छे व्यवहार के समर्थन का
 - हम विज्ञान को लोगों की भलाई के लिए प्रयोग करते हैं, के सुझाव का
 - भौतिक विज्ञान की अपेक्षा नैतिक विज्ञान के अध्ययन का
 - विज्ञान और तकनीकी के बीच भेद का
- लेखक के अनुसार विज्ञान
 - ही सिर्फ एक शक्ति है, जो मानव जाति के भविष्य को निर्धारित करती है
 - मानवीय भाग्य को निर्धारित करने वाली कुछ शक्तियों में से एक है
 - भविष्य में मानव कल्याण का केवल यही एक साधन होगा
 - मनुष्य की प्रगति के रास्ते में आने वाली बहुत-सी बाधाओं में से एक है
- यूरेनियम के केन्द्र के विखण्डन का अध्ययन क्या हो सकता है?
 - आधुनिक तकनीकी के एक उदाहरण का विचार
 - विद्युत के सिद्धान्तों के प्रयोग का विचार
 - किसी भी नैतिक उलझाव के न होने का विचार
 - सभी मनुष्यों की भलाई के लिए महत्वपूर्ण होने का विचार
- निम्न में गलत विलोम शब्द-युग्म है
 - नैतिक-अनैतिक
 - वैज्ञानिक-अवैज्ञानिक
 - विरोध-अविरोध
 - ज्ञान-अज्ञान

उत्तर

1. (d) 2. (d) 3. (a) 4. (b) 5. (c)

उदाहरण 12

राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय एवं विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्त्व है। मानव समुदाय अपनी संवेदनाओं, भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का साधन अपरिहार्यतः अपनाता है। इसके अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं है। दिव्य ईश्वरीय आनन्दानुभूति के सम्बन्ध में भले ही कबीर ने 'गूंगे केरी शर्करा' उक्ति का प्रयोग किया था पर इससे उनका लक्ष्य शब्द-रूपी भाषा के महत्त्व को नकारना नहीं था। प्रत्युत उन्होंने भाषा को 'बहता नीर' कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी। विद्वानों की मान्यता है कि किसी एक राष्ट्र के भू-भाग की भौगोलिक विविधताएँ तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताओं आदि की बाधाएँ उस राष्ट्र के निवासियों के परस्पर मिलने-जुलने में अवरोधक सिद्ध हो सकती हैं। उसी प्रकार भाषागत विभिन्नता से भी उनके पारस्परिक सम्बन्धों में निर्बाधता नहीं रह पाती। आधुनिक विज्ञान के युग में यातायात एवं संचार के साधनों की प्रगति से भौगोलिक बाधाएँ अब पहले की तरह बाधित नहीं करतीं। इसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक सम्बन्धों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं।

मानव-समुदाय को जीवित, जाग्रत एवं जीवन्त शरीर की संज्ञा दी जा सकती है, उसका अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इस व्यक्तित्व को साकार करती है। उसके अमूर्त मानसिक वैचारिक स्वरूप को मूर्त एवं बिम्बात्मक रूप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं। उनकी विविध भावनाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं, संकल्प एवं आदर्श हैं।

- उपर्युक्त अनुच्छेद का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है
 - व्यक्तित्व विकास और भाषा
 - भाषा बहता नीर
 - राष्ट्रीयता और भाषा-तत्त्व
 - साहित्य और भाषा-तत्त्व
- भाव एवं विचार-विनिमय का सक्षम साधन है
 - काव्य साहित्य
 - प्रतीक एवं संकेत
 - शब्दरूपी भाषा
 - ललित कलाएँ
- आधुनिक विज्ञान के युग में किन साधनों की प्रगति से भौगोलिक बाधाएँ पहले की तरह प्रभावित नहीं करती?
 - यातायात
 - संचार
 - संसाधन
 - (a) व (b) दोनों

4. मानव समुदाय को किसको सत्ता दी जा सकती है?

- जीवित शरीर
- भाषागत समुदाय
- जीवित व जाग्रत शरीर
- उपरोक्त में से कोई नहीं

5. साकार का विलोम शब्द है

- निराकार
- अकार
- आकार
- विकार

उत्तर

- (c)
- (c)
- (d)
- (c)
- (a)

उदाहरण 13

बाल श्रम ने भारत माता के दैदीप्यमान मस्तक को मलिनतापूर्ण बना दिया है। उद्योगों और विभिन्न कल-कारखानों में हाड़तोड़ परिश्रम करते बच्चों को देख मानवता रो पड़ती है। भट्टियों पर काम करते हुए मालिकों के लिए अपने शरीर का होम करने वाले मासूम आँख, नाक एवं फेफड़ों की गम्भीर बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। इनकी नियति ही ऐसी है कि मनुष्य जीवन के चक्र का अहम भाग जवानी इनके लिए नहीं बना है। ये तो सीधे ही वृद्धावस्था को प्राप्त करते हैं। कथित मालिकों की झिड़कियाँ और गाहे-बगाहे मार झेलते इन बालक-बालिकाओं का जीवन देखकर प्रतीत होता है कि सृष्टि ने अत्यधिक क्रूरता से इनका भाग्य रचा है। नियोक्ताओं के लिए बाल श्रम का उपयोग निरापद है। इसके माध्यम से वे अनुचित लाभ उठाकर अपना पथ कंटकविहीन कर लेते हैं। बाल श्रम रूपी असुर के बन्धन में जकड़ी बालिकाओं और किशोरियों की स्थिति और भी भयानक है। माता-पिता की दारिद्र्य-मुक्ति हेतु भागीरथी प्रयास करती बालिकाएँ स्वयं एक सर्वभोग्या जलधारा के रूप में प्रवाहमान हैं। जिन्हें जब चाहे ठेकेदार और नियोक्ता पी डालते हैं और अभिभावक विवशतावश चूँ तक नहीं कर पाते।

- “भारतमाता के दैदीप्यमान मस्तक को मलिनतापूर्ण बना दिया है” इस कथन में कौन-सा अलंकार अभिव्यक्त हो रहा है?
 - वक्रोक्ति अलंकार
 - मानवीकरण अलंकार
 - अन्योक्ति अलंकार
 - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
- “सृष्टि ने अत्यधिक क्रूरता से इनके भाग्य को रचा है” यह कथन इस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है
 - माता-पिता ने बच्चों को बाल श्रम के लिए विवश किया है
 - निर्माण क्षेत्रों के लोगों ने बाल श्रमिकों को बढ़ावा दिया है
 - भाग्य दोष के कारण बच्चों को बाल श्रमिक बनना पड़ा है
 - क्रूर नियोक्ता बाल श्रमिकों के भाग्य का अंश गटक जाते हैं

3. “नियोक्ताओं के लिए बाल श्रम का उपयोग निरापद है।” इस वाक्य से क्या अभिप्राय है?

- (a) बाल श्रमिकों के यौन शोषण में सुविधा
- (b) श्रम के सर्वांग शोषण की सुविधा
- (c) बाल श्रमिक हानि नहीं पहुँचाते
- (d) बाल श्रमिक कम मजदूरी पर मिल जाते हैं

4. ‘निरापद’ का विलोम शब्द होगा

- (a) पदछीन
- (b) विपद
- (c) पद
- (d) आपद

5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा

- (a) बालश्रम और समाज
- (b) बालश्रम
- (c) बाल शोषण
- (d) बाल यौन शोषण

उत्तर

1. (b) 2. (c) 3. (c) 4. (d) 5. (b)

उदाहरण 14

चिपको आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पर्यावरण-रक्षा का आन्दोलन है। यह आन्दोलन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस आन्दोलन के तहत वनों की कटाई का विरोध किया गया था। यह आन्दोलन उत्तर प्रदेश के चमोली जिले (अब उत्तराखण्ड में) में वर्ष 1973 को शुरू हुआ। इस आन्दोलन के सूत्रधार भारत के प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा, चण्डीप्रसाद भट्ट और श्रीमती गौरा देवी थे। इस आन्दोलन के जरिए किसानों द्वारा राज्य के वन विभाग के ठेकेदारों द्वारा होने वाली वनों की कटाई का विरोध किया गया। स्त्री-पुरुष, बच्चे सभी ने इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जब भी ठेकेदार किसी वृक्ष को काटने का आदेश देते थे, तो स्त्री-पुरुष उस पेड़ से चिपककर उसका विरोध करते थे। इसलिए इस आन्दोलन का नाम चिपको आन्दोलन पड़ा। वर्ष 1978 में इस आन्दोलन को ‘सम्यक् जीविका पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। इस आन्दोलन की मुख्य उपलब्धि थी- भारत में 1980 का वन संरक्षण अधिनियम और केन्द्र सरकार में पर्यावरण का गठन। धीरे-धीरे यह आन्दोलन उत्तराखण्ड के अलावा अन्य राज्यों में भी फैल गया।

1. चिपको आन्दोलन के तहत किसका विरोध किया गया?

- (a) शिकार करने पर
- (b) वनों की कटाई का
- (c) धूम्रपान का
- (d) वन्य जीव तस्करी का

2. इस आन्दोलन की शुरुआत कब हुई?

- (a) वर्ष 1973 में
- (b) वर्ष 1974 में
- (c) वर्ष 1970 में
- (d) वर्ष 1975 में

3. चिपको आन्दोलन कहाँ से प्रारम्भ हुआ?

- (a) गढ़वाल से
- (b) हरिद्वार जिले से
- (c) चमोली जिले से
- (d) देहरादून से

4. चिपको आन्दोलन के सूत्रधार थे

- (a) भीम राव अम्बेडकर
- (b) इन्दिरा गाँधी
- (c) महात्मा गाँधी
- (d) सुन्दरलाल बहुगुणा

5. सम्यक् का विलोम शब्द है

- (a) समुचित
- (b) उचित
- (c) अनुपयुक्त
- (d) उपयुक्त

उत्तर

1. (c) 2. (b) 3. (a) 4. (d) 5. (c)

उदाहरण 15

वर्तमान भोगवादी व्यवस्था में प्रत्येक वस्तु को ‘उपभोग’ की कसौटी पर कसा जा रहा है। इसके चलते नारी देह एक प्रमुख ‘उपभोग्य’ वस्तु बन गई है। यही कारण है कि आज वेश्यावृत्ति ने चकलाघरों से बाहर निकलकर सभ्रान्त कही जाने वाली कालोनियों तक अपने पाँव पसार लिए हैं। आज पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी कालगर्ल और सेक्स-वर्कर के रूप में कार्य कर रही हैं। यह सामाजिक अधोगति का स्पष्ट संकेत है। इतना ही नहीं वेश्यावृत्ति से एड्स जैसी लाइलाज बीमारी के भी भयावह स्थिति में पहुँचने का संकट सामने खड़ा है।

वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने में दृश्य एवं प्रचार माध्यमों की खासी भूमिका है। आज टेलीविजन और फिल्मों में नारी और पुरुष देह को उत्तेजक रूप में दर्शाया जा रहा है। इसका प्रमुख दुष्प्रभाव यह है कि समाज में कम वय में ही विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ा है, जो युवाओं की यौनाकांक्षाएँ जाग्रत कर उन्हें उनकी पूर्ति हेतु उद्वेलित किए रहता है। यही उद्वेलन उन्हें अन्ततः वेश्यागमन हेतु प्रेरित करता है।

यौनाकांक्षा को तृप्त करने के लिए जब साठ या उससे अधिक वर्ष के लोग वेश्याओं के पास जाते हैं तब समाज के समक्ष एक प्रश्नचिह्न अंकित हो जाता है।

आज यह प्रश्न सबके सम्मुख खड़ा है कि लड़कियाँ वेश्यावृत्ति के अन्धकूप में किस प्रकार आ गिरती हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि इस धन्धे में धकेली गई अधिकांश लड़कियाँ ‘सर्वहारा’ वर्ग से ही होती हैं और उन्हें वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर होना पड़ता है, परन्तु यह भी सत्य है कि शहरों की शिक्षित लड़कियाँ भी शानो-शौकत और शार्टकट रास्ते से धन कमाने की लालसा से इस कार्य में संलग्न हो जाती हैं। यह तथ्य सामने आ चुका है कि गरीबी के कारण वेश्यावृत्ति करने पर विवश लड़कियाँ समाज के प्रति तिरस्कृत दृष्टिकोण रखती हैं। उनके स्थानों पर वे ‘सेक्स-वर्कर’ का दर्जा पाने के लिए संघर्षरत हैं।

1. ‘उपभोग की कसौटी’ से लेखक का क्या तात्पर्य है?

- (a) नारी आज भोग्या के रूप में प्रदर्शित की जा रही है
- (b) वेश्यागामी नारी का उपभोग कर रहे हैं
- (c) उपयोगिता और अनुपयोगिता का निर्धारण
- (d) नारी के विभिन्न उपयोगों का निर्धारण

2. 'सेक्स-वर्कर' किसे कहा गया है?
 - (a) वेश्यावृत्ति से जुड़े दलालों को
 - (b) वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों को
 - (c) सम्भ्रान्त कही जाने वाली वेश्याओं को
 - (d) वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देने वाले लोगों को
3. 'सम्भ्रान्त' का विलोम शब्द है
 - (a) भ्रान्त
 - (b) कुलीन
 - (c) अप्रतिष्ठित
 - (d) प्रतिष्ठित
4. 'सर्वहारा' वर्ग से क्या अभिप्राय है?
 - (a) जीवनापन हेतु कोई भी रास्ता अपनाने का
 - (b) सभी लोगों के लिए कार्य करने वाले लोग
 - (c) सभी प्रकार का आहार ग्रहण करने वाले लोग
 - (d) आर्थिक रूप से दुर्बल लोग
5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है
 - (a) वेश्यावृत्ति
 - (b) वेश्यावृत्ति और मीडिया
 - (c) वेश्यावृत्ति और समाज
 - (d) वेश्यावृत्ति के स्वरूप

उत्तर

1. (c) 2. (b) 3. (c) 4. (d) 5. (a)

उदाहरण 16

पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति में बहुत-सी अच्छी बातें होते हुए भी वह मूलतः अधिकार प्रधान, भोग प्रधान है, उसमें अपने सुख की प्रवृत्ति प्रधान है। इसलिए यहाँ प्रधान जोर शरीर-सुख-भोग तथा उसके निमित्त अगणित साधन जुटाने की ओर है; जबकि भारतीय संस्कृति अनेक बुराइयों के होते हुए भी मुख्यतः धर्म प्रधान, कर्तव्य प्रधान, त्याग और तपस्या प्रवृत्ति-मूलक संस्कृति है। विश्व-मानव या विश्व-मानवता एवं संस्कृति का निर्माण तभी सम्भव है जब मनुष्य अपने शरीर का विचार इस सीमा तक न करे कि उस प्रयत्न में वह आत्मा, वह प्राण ज्योति ही तिरोहित हो जाए, जिससे मानव, मानव है। स्पष्टतः भारतीय संस्कृति में, अहिंसक जीवन निर्माण की, दूसरों के लिए जीने

की सम्भावनाएँ अधिक होने से गाँधी जी की श्रद्धा थी कि भारतीय संस्कृति ही हमारे जीवन का दीप है और वही विश्व-संस्कृति या विश्व-मानवता की आधारशिला बन सकती है।

1. पाश्चात्य संस्कृति के सम्बन्ध में सत्य है
 - (a) वह भौतिकवादी संस्कृति है
 - (b) वह शारीरिक सुख प्रदाता संस्कृति है
 - (c) वह भारतीय संस्कृति से उत्प्रेरित है
 - (d) वह यथार्थवादी संस्कृति है
2. इनमें से कौन-सा कथन सत्य है?
 - (a) पाश्चात्य संस्कृति पूर्णतः निवृत्ति-मूलक है
 - (b) पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति में गुण-दोष विद्यमान हैं
 - (c) पाश्चात्य संस्कृति प्रवृत्ति एवं निवृत्ति मूलक का मिश्रण है
 - (d) भारतीय संस्कृति स्वार्थ एवं परार्थ भाव का मिश्रण है
3. 'पाश्चात्य' का विलोम शब्द है
 - (a) पूर्व
 - (b) उत्तरीय
 - (c) पौरात्य
 - (d) दाक्षिण्य
4. परदुःखकातरता से सम्बन्धित कथन है
 - (a) अहिंसक प्रवृत्ति और दूसरों के लिए जीना
 - (b) धर्म, कर्तव्य, त्याग एवं विश्व मानवता
 - (c) आत्मा एवं प्राण ज्योति का उत्कर्ष
 - (d) परोपकार हेतु सुख-साधन जुटाना
5. उपर्युक्त गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक है
 - (a) पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति
 - (b) भारतीय संस्कृति
 - (c) भारतीय संस्कृति, मानवीय संस्कृति
 - (d) भारतीय संस्कृति, सर्वश्रेष्ठ संस्कृति

उत्तर

1. (a) 2. (b) 3. (c) 4. (a) 5. (d)